मानव जन्म

सोचो जरा करो मन में विचार, मानव जन्म नहीं हर बार।
क्यों तू आया है इस संसार में, क्या तूने पाया है इस संसार में।
कर ले प्रभु कि भक्ति, पा ले जन्म मरन से मुक्ति।
मोह माया के चक्कर में, तूने सारी लगा दी शक्ति।
भूल गया तू प्रभु को, तेरा जन्म गवार हुआ इस संसार में।
सोचो जरा करो मन में विचार, मानव जन्म नहीं हर बार
क्यों तू आया हैं इस संसार में, क्या तूने पाया हैं इस संसार में।।
दौलत खूब कमाई, पर की न किसी की भलाई ।
सब यही रहा जाये, संग तेरे न कौड़ी जाए ।
मस्त रहा व्यस्त रहा, अपने परिवार में इस संसार में।।
सोचो जरा करो मन में विचार, मानव जन्म नहीं हर बार।
क्यों तू आया है इस संसार में, क्या तूने पाया है इस संसार में।

– संजय जैन (मुंबई)

उठावने के दिन क्या तेरहवीं उचित है ?

समयाभाव का एक अत्यंत दुष्प्रभाव आज कल देखने में आ रहा है । परिवार के सदस्य की मृत्युपरांत परिवार व समाज के सदस्य उसका उठावना (तीसरा) व तेरहवां (पगड़ी रस्म) का कार्य एक ही दिन अर्थात उठावने के दिन ही करने लगे है । जो कि अत्यंत दोषपूर्ण और आगम विरुद्ध प्रथा है । प्रथम तो यह जिसके घर में यह दुखद घटना घटी है उस परिवार के सदस्य दुख से अभी उभर ही नहीं पाते है और उपर से तेरहवी (पगड़ी रस्म) की जिम्मेदारी उन पर आ जाती है, यह व्यवस्था उस परिवार और अधिक दुखी कर देती है । जैन आगम के अनुसार जब तक परिवार में सूतक है जब तक पगड़ी जैसी रस्मों का करा जाना उचित नहीं है । आजकल तो प्राय: देखने में आ रहा है कि मृत्यु के 24 घंटे के अंदर ही तीसरा व तेरहवीं की रस्म दोनो होने लगे है । आगम अनुसार तीन दिन तक खारी नहीं उठाना चाहिए क्योंकि अग्निकायिक जीवों की आयु भी तीन दिन तक की रहती है जबकि परिजन दूसरे दिन ही जाकर खारी उठा देते है जो आगम सम्मत नहीं है और उसी अशुद्ध अवस्था में परिजन भी मंदिर आ जाते है जो कि पूर्ण:त दोषपूर्ण व आगम विरुद्ध है । अत: ऐसी परम्परा की सभी समाजजनों को मुखर होकर विरुद्ध करना चाहिए और इसको समाप्त करने के लिए समाजजनों को मिलजुलकर आवश्यक कदम उठाना चाहिए ताकि इस कुप्रथा पर रोक लग सके अन्यथा वह दिन दूर नहीं कि सुबह चिता को अग्नि दी जावेगी, दोपहर में उठावना व शाम को तेरहवां (पगड़ी रस्म) कर दिया जावेगा । **आपके इस बारे में क्या विचार है, वे सादर आमंत्रित है ताकि एक निश्चित निर्णय पर पहुंचने में उपयोगी सिद्ध हो ।** **– प्रवीणकुमार जैन, विजय नगर, इन्दौर**

* विनम्र श्रद्धांजली *

* **श्री प्रमोदकुमार जैन** का देहांत 17 दिसम्बर को भोपाल में हो गया । 52 वर्षीय प्रमोद जैन की मौत के बाद उनके परिजनों ने उनकी स्किन दान कर दी । परिजन नेत्रदान भी करना चाहते थे, लेकिन ऑर्गन डोनेशन के लिए बनाए गए प्रोटोकाल के चलते नेत्र दान नहीं हो सका । भोपाल में अभी तक पांच लोगो के परिवार द्वारा ही स्किन दान हुआ हैं । जैन बैंक ऑफ इंडिया के कर्मचारी थे । उन्हे कार्डियक अरेस्ट के साथ ब्रेन हेमरेज हुआ था। उनके देहांत पश्चात उनके परिजनों ने स्किन और नेत्रदान करने की इच्छा जताई थी ।

* **श्री दयाचंदजी जैन करमौरावालों** का निधन 31 दिसम्बर को अहमदाबाद में हो गया । आप बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। समाज सेवा का पथ बड़ा दुर्गम होता है, जिस पर आप निर्भीक, मृदुभाषी, संघर्ष के साथ किसी भी उलाहनों की परवाह न करते हुए समाज कार्यो में सतत संलग्न रहे । चतुर्विध जैन संघ की सेवा करना आपका प्रमुख गुण था। आजीवन धर्म और समाज को समर्पित, विशिष्ट संगठनों, तीर्थक्षेत्रों का विकास हो, समाज को प्रभावी दिशा देने की उनकी क्षमता सदैव अविस्मरणीय रहेगी। आप अ.भा. गोलालारीय परिषद के संरक्षक थे । आपके मन में गोलालारीय समाज की उन्नति की प्रबल भावना थी । समय समय पर आपका मार्गदर्शन एवं योगदान संगठन को मिलता रहा, जो सदैव अविस्मरणीय रहेगा ।

* **श्रीमती कस्तूरीबाई जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री फूलचंदजी जैन (राख पंचमपुरवाले) का आसामयिक निधन 30 जनवरी को हो गया । आप बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी । मंदिर में आप अपने शांत स्वभाव के कारण काफी लोकप्रिय थी । आपने कुछ समय पूर्व ही जिन मंदिरों में स्वयं ही दानराशि प्रदान भेंट की । संभवत: आपको मृत्यु का आभास पहले से हो गया था ।

* **डॉ. विजेन्द्रकुमार जैन** का निधन 6 फरवरी 2017 को नागपुर में हो गया है । आप जबलपुर इंजीनियरिंग कालेज के प्रिंसिपल थे । आप समाज सेवा और समाज कार्यों में अपनी भागीदारी निभाते रहे ।

* **श्री सागरमलजी जैन** सुपुत्र स्व. श्री काशीराम जैन का देहांत 12 फरवरी को इन्दौर में हो गया । आपके परिजनों ने निधन पश्चात आपके नेत्रदान किये । आप सरल स्वभावी व हसमुख व्यक्तित्व थे । आपकी स्मृति में परिजनों ने गोलालारीय समाज को 1100/- व गोलालारीय दर्शन पत्रिका को 1100/- की राशि दान स्वरुप प्रदान की ।

* संत शिरोमणी 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं आर्यिका रत्न 105 गुणमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में श्री प्रभाचंदजी जैन (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) की धर्मपत्नी समाधिस्थ व्रती श्राविका दशम प्रतिमाधारी **श्रीमती शांति बाई** का सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण सहजपुर में दिनांक 17 जनवरी को हुआ।

प्रतिभावान बच्चों का सम्मान समारोह सम्पन्न

शांतिकुमार जैन, गंजाबासौदा । श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान के मंच से गोलालारीय दर्शन परिवार, इन्दौर द्वारा एवं प्रायोजक श्री अनिल कुमारजी दिवाकीर्ति द्वारा अपने पिता स्व. श्री नन्दनलालजी दिवाकीर्ति की स्मृति में-स्मृति चिन्ह व गोलालारीय दर्शन पत्रिका परिवार, इन्दौर की ओर से 78 प्रतिभावान बच्चों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया । सम्मान समारोह मुनि श्री 108 कुन्थुसागर जी महाराज के मार्ग दर्शन में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर मुनि श्री ने अपने प्रवचन में पाँच लाख रुपये का फण्ड बनाकर आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को सहायता राशि देने का सुझाव दिया इस सुझाव को सकल जैन समाज ने तुरंत स्वीकृति प्रदान कर दी व तुरन्त ही पाँच व्यक्तियों ने एक एक लाख की स्वीकृति दे दी । जिसमें प्रमुख हैं - श्री डॉ. अनिल कुमारजी दिवाकीर्ति, श्री निर्मल कुमारजी जैन, श्री आनन्द कुमारजी मोदी, श्री अनिल कुमारजी मोदी, श्री आलोक कुमारजी मोदी । इस फंड के माध्यम से आर्थिक रुप से कमजोर बच्चों को शिक्षा संबंधी सहयोग प्रदान किया जावेगा।

*** समाज के माननीय सदस्यों से सादर अनुरोध है कि आपके द्वारा गोलालारीय दर्शन पत्रिका में किसी भी मद में आपके द्वारा नगद/चेक द्वारा राशि जमा कराई गई हो (सीधे बैंक खाते में इन्दौर कार्यालय या क्षेत्रीय प्रतिनिधियों) और आपको रकम की रसीद प्राप्त नही हो पाई हैं तो आप हमें 9424013136 पर दोपहर 3 से रात 10 बजे तक सूचित कर सकते हैं ताकि आपको शीघ्र ही रसीद भिजवाने की व्यवस्था की जा सके। गोलालारीय दर्शन में सदस्यता शुल्क का विवरण पत्रिका पर लगे पते के स्टीकर पर उल्लेखित हैं। किसी भी प्रकार के सुधार के लिए आप चर्चा करते समय स्टीकर पर अंकित सदस्यता क्रमांक अवश्य बताएं ताकि उचित सुधार संभव हो सके।**

*** वर्तमान में 4200 परिवारों को पत्रिका नियमित भेज रहे हैं इन पतो में किसी भी प्रकार का परिवर्तन कराना चाहते हैं तो पत्रिका के वॉटसएप नं. 94067-44064 पर पोस्ट करे। यह फोन चर्चा हेतु उपलब्ध नहीं है ।**

गोलालारीय दर्शन के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण
घोषणा फार्म - 4 (नियम 8)

1.	प्रकाशक स्थल	127, देवी अहिल्या मार्ग, इन्दौर
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
4.	प्रकाशक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
5.	संपादक का नाम	राजेन्द्र जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	डीकेएन 230, विजय नगर, इन्दौर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हों	श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास, इन्दौर

मैं बाहुबली जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं ।

हस्ताक्षर
बाहुबली जैन
1 मार्च 2017 (प्रकाशक के हस्ताक्षर)